



मधुबन

ओम् शान्ति

अंक 387

अक्टूबर 2024



# पत्र-पुष्प



## “सम्पन्नता और सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए संस्कार मिलन की रास करो”

(याद पत्र – 20-09-2024)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, ब्रह्मा बाप समान उपराम और साक्षीदृष्टा के संस्कार धारण कर सम्पूर्णता के लक्ष्य को समीप लाने वाले, सदा आपस में संस्कार मिलन की रास करने वाले निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - संगमयुग की इन अमूल्य घड़ियों में याद और सेवा का बैलेन्स रख आप सभी सदा उड़ती कला का अनुभव कर रहे होंगे! मधुबन में तो सेवाओं की बहार है। अनेक वर्गों की बहुत सुन्दर काम्फेन्सेज चल रही हैं, जिसमें अनेकानेक प्रतिष्ठित मेहमान आकर खूब रिफ्रेश होकर, बाबा के कार्यों के गुणगान करके जाते हैं। मीठे बाबा ने अपने बच्चों को इस कलियुगी विश्व को परिवर्तन करने की बहुत बड़ी जवाबदारी दी है। बाबा कहते बच्चे, आपकी पवित्र वृत्ति से तमोगुणी प्रकृति का और आपकी दृष्टि से इस पुरानी सृष्टि का परिवर्तन होगा।

वर्तमान समय बापदादा का विशेष इशारा है कि बच्चे हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझ हर संकल्प, श्वास को समर्थ बनाओ। अब मन्सा, वाचा, कर्मणा में कोई भी बनावटी रूप न हो। अन्दर जो भी पुराने भाव-स्वभाव का किचड़ा है, उसे परिवर्तन कर सच्चाई और सफाई का गुण धारण करो। जो करो, जो सोचो वही वर्णन करो। जो ऐसे सच्चे साफ हैं वही सबके प्रिय हैं। सच्चे बच्चों पर साहेब भी राजी होता है।

अभी बापदादा बच्चों की आपस में संस्कार मिलन की रास देखना चाहते हैं इसके लिए एक दो की बातों को समझो, स्वीकार करो और सबको सत्कार दो, इससे ही सम्पूर्णता और सफलता समीप आयेगी। जब आपस में संस्कारों में समानता आ जायेगी तब एक दो के समीप आयेंगे। जैसे साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षीदृष्टा के रहे, ऐसे हम बच्चों को भी इन संस्कारों में समानता लानी है। इस समय जब हम सबके दिलों पर विजयी बनेंगे तब ही भविष्य में विश्व महाराजन बन सकेंगे।

अभी संस्कारों और संकल्पों को एक दो से मिलाना है, ध्यान रखना है कि हमारी स्थिति स्तुति के आधार पर न हो। जब स्तुति-निंदा में समान स्थिति रहेगी तब संस्कार टकरायेंगे नहीं। अभी से विस्मृति के अथवा हार खाने के संस्कार मिटाने हैं, इसके लिए अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा करनी है कि यह संस्कार, यह व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन्न नहीं होने देंगे! जब ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तब अन्त में विजयी बनेंगे।

बाबा कहते बच्चे, अभी क्यों, क्या के व्यर्थ संकल्पों की क्यु समाप्त करो तब सम्पूर्ण बनेंगे और ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे। अब पुरानी नेचर बदलकर ईश्वरीय नेचर बना लो। कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदत न रहे। सदैव यही कोशिश करनी है कि हमारी किसी भी चलन द्वारा कोई को दुःख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो - यह है ब्राह्मण कुल की रीति। बोलो, ऐसी रीति अपनाते हुए अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनाई है ना!

समय भी अन्तिम घड़ियों की सूचना दे रहा है। जरूर सभी का अटेन्शन होगा।

अच्छा - आप सभी खुशमौज में होंगे। सबको याद...

ईश्वरीय सेवा में,  
बी.के. रतनमोहिनी





# ये अव्यक्त इशारे



## पुराने संस्कार परिवर्तन कर संस्कार मिलन की रास करो

1) ब्राह्मण जीवन में कोई भी बात मुश्किल नहीं है, लेकिन अपने संस्कार, अपनी कमजोरियां मुश्किल के रूप में देखने में आती हैं। इसके लिए अपने को शमा पर इतने तक मिटाना है, जो कहते हो “मेरे संस्कार” यह मेरापन भी मिट जाये। नेचर भी बदल जाये। जब हरेक की नेचर बदलेगी तब ब्रह्मा बाप समान अव्यक्ति फीचर्स बनेंगे।

2) जो भी पुराने संस्कार हैं और पुरानी नेचर है वह बदल कर ईश्वरीय नेचर बनाओ। कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदतें न रहें। आपके परिवर्तन से अनेक लोग सन्तुष्ट होंगे। सदैव यही कोशिश करो कि हमारी चलन द्वारा कोई को भी दुःख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो - यह है ब्राह्मण कुल की रीति।

3) जैसे बाप के संस्कार सदा उदारचित, कल्याणकारी, निःस्वार्थ, रहमदिल, परोपकार आदि हैं। ऐसे आप बच्चों के भी संस्कार हो। सदा आपस में एकमत, स्नेही, सहयोगी बन, संस्कार मिलन करना - यही महानता है। संस्कारों का टक्कर न हो लेकिन सदा संस्कार मिलन की रास करते रहो। संस्कारों को मिलाना अर्थात् सम्पूर्णता को और समय को समीप लाना।

4) आप सभी बच्चों का यह ब्राह्मण जन्म मरजीवा जन्म है। मरजीवा बनना अर्थात् अपनी देह से, मित्र सम्बन्धियों से, पुरानी दुनिया से मर जाना। जैसे कोई मर जाता है तो पिछले संस्कार खत्म हो जाते हैं। तो यहाँ भी पिछले पुराने संस्कार ऐसे लगने चाहिए जैसे और कोई के थे, हमारे नहीं। जैसे ब्राह्मण गन्दी चीज़ को नहीं छूते हैं वैसे पुराने संस्कारों से बचना है। छूना नहीं है।

5) संस्कार मिलन की रास करने के लिए कुछ मिटाना पड़ेगा, कुछ समाना पड़ेगा, यह मेरे संस्कार हैं, यह शब्द भी मिट जाये। इतने तक मिटना है जो पुरानी नेचर बदलकर ईश्वरीय नेचर बन जाये। जितना एक दो के समीप आते जा रहे हो उतना एक दो को सम्मान देते चलो। सम्मान देने से संस्कार मिलन सहज हो जायेगा।

6) संस्कार मिलन की रास करने के लिए एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो। अगर स्वीकार करना और सत्कार देना, यह दोनों ही बातें आ जाएं तो सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आ जायेंगी। जब एक अनेकों को सम्पूर्ण

संस्कार वाला बना लेंगे तब समाप्ति होगी।

7) जितना आपस में संस्कारों को समानता में लायेंगे उतना ही समीप आयेंगे। जैसे साकार रूप के संस्कार उपराम और साक्षी दृष्टा के रहे, यही साकार के सम्पूर्ण स्थिति के श्रेष्ठ लक्षण थे। इन संस्कारों में समानता लानी है। इससे ही सर्व के दिलों पर विजयी होंगे और जो संगम पर सर्व के दिलों पर विजयी बनता है वही भविष्य में विश्व महाराजन् बनता है।

8) देह की आकर्षण के संस्कार जो न चाहते हुए भी खींच लेते हैं, इस संस्कार को परिवर्तन करने के लिए मुख्य दो बातों का ध्यान रखो: 1- हर एक के चरित्र को देखना है और 2- चैतन्य (विचित्र-आत्मा) को देखना है। वर्तमान समय मुख्य यही पुरुषार्थ चाहिए। इसी पुरुषार्थ से संस्कार पवित्र बनते जायेंगे। दैहिक दृष्टि समाप्त हो जायेगी।

9) अन्दर में जो भी पुराने भाव-स्वभाव का किचड़ा है, उसे परिवर्तन करने के लिए सच्चाई और सफाई का गुण धारण करो। मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों में बनावटी रूप न हो। सच्चाई अर्थात् जो करें, जो सोचें वहीं वर्णन करें। ऐसा जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। सच्चे पर साहेब राजी होता है।

10) पुराने संस्कार तो मोटी चीज़ हैं अब पुराने संकल्प भी खत्म होने चाहिए। पुराने संस्कार उत्पन्न होने का कारण है विस्मृति। अपनी विस्मृति के कारण व्यर्थ बातें सहज को मुश्किल बना देती हैं। कोई न कोई संस्कारों में अगर यह देह का वस्त्र चिपका हुआ है अर्थात् तंग, टाइट है, तो उतर नहीं सकता। जब सभी संस्कारों से न्यारे हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी-प्यारी फरिश्ता समान हो जायेगी।

11) जैसे होली पर लोग आपस में गले मिलते हैं, ऐसे यहाँ संस्कार मिलन ही मंगल मिलन है। एक दो के संस्कारों को जान करके, एक दो के स्नेह में एक दो से मिल-जुल कर रहना है। जैसे कोई से विशेष स्नेह होता है तो उनसे मिक्स हो जाते हो, ऐसे एक दो में मिक्स होने के लिए जितना ही नॉलेजफुल उतना ही सरल स्वभाव बनो।

12) एक दो के स्नेही तब बनेंगे जबकि संस्कारों और संकल्पों को एक दो से मिलायेंगे। लेकिन ध्यान रहे आपकी स्थिति स्तुति

के आधार पर नहीं हो। नहीं तो डगमग होते रहेंगे। कई बच्चे जब कुछ करते हैं तो उसके फल की इच्छा रखते हैं। स्तुति होती है तो स्थिति अच्छी रहती है अगर कोई निंदा कर देता है तो अपनी स्टेज को छोड़ एक दो से किनारा कर लेते हैं। लेकिन स्तुति-निंदा में समान स्थिति रहे तो संस्कार टकरायेंगे नहीं।

**13)** संस्कार मिलन की रास करने के लिए “बालक और मालिकपन” का गुण समान रूप में चाहिए। बालकपन अर्थात् निरसंकल्प हो जो आज्ञा मिले उस पर चलना। मालिकपन अर्थात् अपनी राय देना। जहाँ बालक बनना है वहाँ अगर मालिक बन जायेंगे तो संस्कारों का टक्कर होगा। तो राय दी, मालिक बने, फिर जब फाइनल होता है तो बालक बन जाना चाहिए।

**14)** जो बहुत समय के संस्कार होते हैं वही अन्त की स्थिति रहती है। लौकिक रीति से जब कोई शरीर छोड़ते हैं, अगर कोई संस्कार दृढ़ होता है, खान-पान वा पहनने आदि का तो पिछाड़ी समय भी वह संस्कार सामने आता है इसलिए अभी से ये विस्मृति के अथवा हार खाने के संस्कार मिट जाने चाहिए। इसके लिए अपने आप से दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि यह संस्कार, यह व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन्न नहीं होने देंगे। जब ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तब अन्त में विजयी बनेंगे।

**15)** पुराने संस्कार, व्यर्थ संकल्प वा विकल्प के रूप में जब इमर्ज होते हैं तब बुद्धि में एक ही शब्द आता है कि यह क्यों हुआ, क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यु शुरू हो जाती है। इस क्यु की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी। फिर वह क्यू लगेगी। जब क्यों शब्द निकल जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे।

**16)** जो अपने संस्कार बापदादा के समान नहीं हैं, उन्हें बिल्कुल टच नहीं करो। देह और देह के सम्बन्ध यह सीढ़ी तो चढ़ चुके अब बुद्धि में भी पुराने संस्कार इमर्ज न हों क्योंकि जैसे संस्कार होंगे वैसा स्वरूप होगा। तो जैसे बापदादा के गुण हैं, वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प होने चाहिए फिर सभी के मुख से निकलेगा कि यह तो वही लगते हैं।

**17)** पुरानी बातें, पुराने संस्कार ऐसे अनुभव हों जैसे कि नामालूम कब की पुरानी बात है। ऐसे नाम निशान खत्म हो जाये। इसके लिए 1- अपनी बुद्धि से उपराम 2- संस्कारों से भी उपराम। “मेरे संस्कार हैं” इस मेरे-पन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं पन से भी उपराम। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये। जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये।

**18)** प्लैन और प्रैक्टिकल को समान बनाने के लिए स्मृति में प्लैन, वाणी में भी प्लैन और कर्म में भी प्लैन अर्थात् श्रेष्ठता हो। कोई भी पुराने संस्कार का कहाँ दाग न हो। जब ऐसे प्लैन हो

जायेंगे तब प्लैन और प्रैक्टिकल एक हो जायेंगे। फिर सफलता एरोप्लेन की मुआफ़िक उड़ेगी।

**19)** कई बच्चे जब पुरुषार्थ नहीं कर पाते हैं तब नेचर पर दोष रखते हैं, कहते हैं हमारी नेचर ऐसी है। लेकिन नहीं। आप लोगों का तो कर्तव्य ही है नेचर क्योर करना। वह नेचर क्योर वाले फास्ट रखाते हैं। ऐसे आप बच्चे भी पुरुषार्थ में जो नुकसानकारक बातें हैं, उनकी फास्ट रखो और प्रतिज्ञा करो कि यह करके ही छोड़ूंगा। बन कर ही छोड़ूंगा जब इतना निश्चयबुद्धि बनेंगे तब विजयी बनेंगे।

**20)** सर्व का सहयोगी बनने के लिए अपने पुराने संस्कारों को मिटाना पड़ता है, जब अपने संस्कार मिटायेगे तो दूसरे आपको स्वयं ही फालो करेंगे। एक हम, दूसरा बाप। तीसरी बातें देखने में आयेंगी लेकिन देखते हुए भी न देखो, अपने को और बाप को देखो। स्लोगन यही याद रखो - कि “स्वयं को मिटायेगे लेकिन सर्व के सहयोगी बनेंगे।”

**21)** जैसे वह बहुत पहले के साउन्ड को कैच करते हैं, वैसे आप अपने 5000 वर्ष पहले के दैवी संस्कार कैच करो। सदैव यह स्मृति में रखो कि मैं यही था और फिर बन रहा हूँ। जितना-जितना आदि और अनादि पवित्र संस्कारों को कैच कर सकेंगे उतना उसका स्वरूप बन सकेंगे।

**22)** जब आपस में दिलों का मिलन होगा तब आपके संस्कारों में बापदादा के संस्कार देखने में आयेंगे, फिर प्रत्यक्षता के नगाड़े बजेगे और समाप्ति होगी। बापदादा अब संस्कार मिलन की महारास देखना चाहते हैं, इसके लिए पहले स्वयं को एडजेस्ट कर दूसरों से संस्कार मिलाने का दृढ़ संकल्प करो। एडजेस्ट करने की शक्ति संस्कारों को मिला देगी।

**23)** बापदादा से तो मिलन मनाते हो लेकिन बड़े से बड़ा मिलन है आपस में संस्कारों का मिलन। जब यह संस्कार मिलन हो जायेगा तब जयजयकार होगी, इसके लिए मधुरता के गुण को धारण करो। कटाक्ष के बोल वा कटु बोल नहीं बोलो। जैसे मिलन में हाथ मिलाते हैं – यह मिलन है संस्कार मिलन – अगर सबके संस्कार मिलकर बाप समान हो जाएं, सबके संस्कार एक समान हो जाएं तो एक राज्य, एक धर्म वाली दुनिया आ जायेगी।

**24)** मन में जब कोई संकल्प उत्पन्न होता है तो उसमें सच्चाई और सफाई चाहिए। अन्दर में कोई भी भाव-स्वभाव, पुराने संस्कारों वा विकर्मों का किचरा नहीं हो। जो ऐसी सफाई वाला होगा वही सच्चा होगा और जो सच्चा होगा वह सबका प्रिय होगा। उसमें भी सबसे पहले वह प्रभुप्रिय होगा। फिर दैवी परिवार का प्रिय होगा। संस्कारों की टक्कर से बच जायेगा।

25) यह देह रूपी वस्त्र किसी भी संस्कार से लटका हुआ न हो। जब सभी पुराने संस्कारों से न्यारा हो जायेंगे तो फिर अवस्था भी न्यारी हो जायेगी इसलिए सभी बातों में इज़ी रहो। जब खुद सभी में इज़ी रहेंगे तो सभी कार्य भी इज़ी होंगे और पुरुषार्थ भी इज़ी होगा।

26) यदि आपको कभी कोई का विचार स्पष्ट नहीं लगता है तो भी ना कभी नहीं करना चाहिए। शब्द सदैव हाँ जी निकलना चाहिये। समय को देखकर ईशारा दे सकते हो, अगर उसी समय ना कहकर कट करेंगे तो संस्कार टकरायेंगे, इसलिए हाँ जी कर धरनी बनाओ, फिर समय देख इशारा दो, यही विधि है संस्कार मिलन की।

27) ब्राह्मण अर्थात् सबके दिल पसन्द स्वभाव-संस्कार वाले। मैजारिटी 95 परसेन्ट के दिलपसन्द जरूर हो। दिल पसन्द अर्थात् सर्व से लाइट। हर बोल, कर्म और वृत्ति से हल्कापन अनुभव हो। आपके कर्म, वृत्ति उसको परिवर्तन करें, इसके लिए सहनशक्ति धारण करो। भल कोई किसी भी संस्कार के वश परवश आत्मा हो, उस आत्मा को भी सहयोग दो। कोई का हद का संस्कार प्रभावित न करे।

28) बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए विशेष दो बातें ध्यान में रखनी हैं - एक सदा संस्कारों को मिलाने की यूनिटी, इसके लिए हरेक अपने को चेन्ज करे, समाने की शक्ति धारण करे तो दूसरे का संस्कार भी अवश्य शीतल हो जायेगा। दूसरा - सन्तुष्ट रहना है

और सबको सन्तुष्ट करना है। जब यह दोनों बातें सदा ध्यान पर रहें तब बाप जो है जैसा है, वैसा दिखाई दे और प्रत्यक्षता हो।

29) संस्कार भिन्न-भिन्न हैं और रहेंगे भी लेकिन संस्कारों को टकराना या किनारा करके स्वयं को सेफ रखना - यह अपने ऊपर है। अगर कोई का संस्कार टकराने वाला है भी तो दूसरा ताली नहीं बजावे। हर एक स्वयं को चेंज करें। सदा एक दो में स्नेह की, श्रेष्ठता की भावना से सम्पर्क में आये, गुणग्राही बनें तो एकमत का संगठन परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनेगा।

30) अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव सब-कुछ भस्म करो। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों का संघार किया। असुर कोई व्यक्ति नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म किया। यह अभी आपकी ज्वालास्वरूप स्थिति का यादगार है। अब ऐसी योग की ज्वाला प्रज्ज्वलित करो जिससे आसुरी संस्कार भस्म हो जाएं और यह कलियुगी संसार परिवर्तन हो जाये।

31) जैसे गेट की रखवाली की जाती है, ऐसे माया का जो गेट है, उसकी भी रखवाली करनी है, जिससे कोई भी आसुरी संस्कार वा संकल्प अन्दर प्रवेश न हो सके, फिर आपके पास कैसी भी आत्मा आयेगी वह आते ही आसुरी संस्कारों और व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो जायेगी। जब ऐसी सर्विस करेंगे तब प्रत्यक्षता होगी।

## (त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

“बाबा को दिल में बिठाना है तो उसे बहुत स्वच्छ रखो, मन में कोई भी व्यर्थ वा साधारण बातें ना हों”

(10-07-08)

बाबा मुरली शुरू करते ही पहला शब्द कौन-सा बोलते हैं? ओम् शान्ति। हमारा आदि मन्त्र भी ओम् शान्ति है। यह ओम् शान्ति का महामन्त्र सभी समस्याओं का समाधान है। लेकिन हम उस अर्थ स्वरूप में स्थित नहीं होते हैं इसलिए हमारी अशान्ति अभी तक जाती नहीं है। जैसे बल्ब का स्वीच का ऑन करते हैं तो अन्धकार चला जाता है, ऐसे ही अगर

हम ओम् शान्ति शब्द के अर्थ में, उस स्वरूप में स्थित हो जायें तो जो भी समस्या है वह सहज समाप्त हो जायेगी क्योंकि आज की मूल समस्या है देहभान। देहभान ही भिन्न-भिन्न रूपों में समस्या को उत्पन्न करता है। कभी भी कोई समस्या आवे तो आप नोट करें कि इस समस्या का कारण किस प्रकार का देह-अभिमान है? देह की वृत्ति, देहभान के संस्कार हैं तो

कर्मन्द्रियां उसी प्रकार के कर्म की तरफ आकर्षित होंगी। अभी उस देह भान को हमें मिटाना है तो क्या करें? सभी की चाहना है, उमंग है, बाबा भी बार-बार होमवर्क के रूप में इशारा दे रहे हैं।

तो जो बाबा ने कहा है वो करना ही है। सोचना नहीं है, कहना नहीं है। संगठन में हाथ तो सब उठा देते हैं, पर मन का हाथ नहीं उठाते हैं। मन में दृढ़ संकल्प का हाथ उठाना, यह है सच्चा हिम्मत का हाथ उठाना। तो अभी हमको इस देहभान के फाउण्डेशन को खत्म करना है। सिर्फ मैं आत्मा हूँ, यह कहना और इस स्वरूप में स्थित होके कहना, इसका अभ्यास और अटेंशन (चेकिंग) कम है इसलिए मैं-मैं शब्द का प्रयोग ज्यादा होता है। उसकी जगह बाबा बाबा शब्द यूज में आ जाये। शुरू में बाबा ने मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ यह कूट-कूटके पक्का कराया। पहले तो आत्मा का ही ज्ञान था, मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ। तो बाबा कहते थे चेक करो कि अभी मेरा मन कहाँ गया? क्या मैं आत्मा से बात कर रही हूँ या शरीर के भान में हूँ? हम लोगों ने इसका बहुत अभ्यास किया, चेकिंग करते थे। बात कर रही हूँ, तो किससे बात कर रही हूँ? सुन रही हूँ तो मैं कौन सुन रही हूँ? सुनाने वाले की दृष्टि और सुनने वाले की दृष्टि क्या है? मतलब आत्मा का ज्ञान बाबा ने बहुत पक्का कराया। अभी वह अभ्यास कम है। कामकाज में ज्यादा रहते हैं और अभ्यास कम है। कामकाज करते भी हम आत्मा का पाठ पक्का कर सकते हैं क्योंकि बाबा ने हमको कहा है कि तुम कर्मयोगी हो। कर्मकर्ता नहीं हो। कर्म और योग दोनों का बैलेंस चाहिए। जो काम रहे हैं, उसी के संकल्प ज्यादा चलते रहते तो कर्मयोगी नहीं बन सकते।

जैसे बाबा करनकरावनहार है, वैसे यह शरीर करनहार है और आत्मा करावनहार है। तो करावनहार माना मालिक। हम कर्मयोगी हैं तो कर्म करते हुए भी बार-बार यह अभ्यास करें और चेक करते रहें, मैं आत्मा मालिक करावनहार बन कर्म करा रही हूँ। अगर मालिक होशियार नहीं है, अटेंशन थोड़ा ढीला है इसलिए चेक करेंगे तो अभ्यास की तरफ ध्यान जायेगा। अगर हमारा मन किसी भी प्रकार से देहभान के वैरायटी रूपों में प्रभावित है, तो एक सेकण्ड में बिन्दी नहीं लगा सकेंगे क्योंकि उसके लिए कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पॉवर चाहिए। संस्कार के वश हुए तो मन कन्ट्रोल में नहीं है ना। वृत्ति कहाँ चली जाती है, मन पर कन्ट्रोल नहीं है। तो बार-बार चेक करें कि सारे दिन में स्वराज्य अधिकारी रहे? कर्मन्द्रियों के अधिकारी बनना है। जो बात हुई, अगर उसका ही संकल्प चलता रहता है, तो यह साधारणता है। हम विश्व से न्यारे हैं, स्वराज्य अधिकारी हैं, तो उस अधिकार के रूप से मन को चलायें,

क्योंकि मन ही धोखा देता है। वृत्ति जाती है या कर्म-सम्बन्ध में फंसते हैं, जो भी गलतियाँ हमसे होती हैं, वह मन के संकल्पों द्वारा ही होती हैं। हम कर्मन्द्रियों के राजा हैं तो मन के ऊपर भी हमारा राज्य होना चाहिए। मन मेरा मुख्य मंत्री है, मालिक नहीं है। हम आत्मा मालिक हैं तो मंत्री के ऊपर ऑर्डर होना चाहिए। मन में कई ऐसी बातें होती हैं, उसे मन से निकाला नहीं है तो वही बातें बार-बार होने से वो व्यर्थ का रूप बन जाता है।

बाबा कम्बाइण्ड है, यही माया डाकू भुला करके अकेला कर देती है। फिर अन्दर ही अन्दर मन में बाबा को उलहना देते रहेंगे। बाबा कहते बच्चे कम्बाइण्ड होकर रहो, फिर अधिकारी होकर कहो कि बाबा आपको मदद करना है, तो बाबा मदद जरूर करेंगे। यदि बाबा टाइम पर हाज़िर नहीं होता तो जरूर इसका कारण है कि हम श्रीमत पर सदा जी हाज़िर नहीं होते हैं। अभी प्रैक्टिस करो बाबा और मैं, और कोई संकल्प न चले। जैसे यहाँ अभी मन में और कोई भी कारोबार आदि के संकल्प नहीं हैं, तो ट्रायल करो कि मैं फरिश्ते रूप आत्मा हो सकती हूँ? यहाँ चांस अच्छा है क्योंकि वायुमण्डल अच्छा है, कोई संस्कार नहीं, कोई विघ्न नहीं है इसलिए इसका अभ्यास और अनुभव बहुत अच्छा, जल्दी और ज्यादा से ज्यादा कर सकते हैं। आगे चलकर जिम्मेवारियाँ तो बढ़नी ही हैं क्योंकि विश्व का मालिक बनना है, विश्व को सम्भालना है तो बातें आयेंगी, लेकिन अभ्यास होगा तो आपको मदद बहुत मिलेगी। और बाबा ने कहा हुआ है कि कोई भी बात हो, उसी टाइम मेरे को दे दो। ऐसी कोई बात आ गई तो उसी समय मेरा बाबा कह दो, तो मैं हाज़िर हो जाऊंगा। आपको जो नहीं सहन हो सकता, नहीं सम्भाल सकते तो मेरे को दे दो तो हल्के हो जायेंगे। जो चीज़ किसी को दी जाती है, तो वो अपनी नहीं होती है। दूसरे की हो गयी। अगर हम उसको यूज करना चाहते हैं, तो अमानत में ख्यानत हो जाती है। एक बार दिल से बाबा को बात दे दी फिर भी कई बार वो बात आ जाती है। तो यह समझें कि पराई चीज़ को हम अपना क्यों मानें? उस समय आप छोटे बन जाओ।

मन खाली होगा तो सिर्फ बाबा याद आयेगा क्योंकि बाबा व्यर्थ के किचड़े में बैठ ही नहीं सकता, तो हम ऐसे ही नहीं समझें कि मेरे दिल में बाबा बैठा है या बाबा के दिल में हम हैं। बाबा दिल में समाया रहे उसके लिए स्वच्छता जरूर चाहिए। मन में और कोई संकल्प नहीं हो। सेवा का हो या स्व-उन्नति का हो, स्वउन्नति के स्वरूप में स्थित हो जायें। अगर स्वरूप में स्थित नहीं होते हैं तो भी वो मजा नहीं आता है। सिर्फ वर्णन होता है, जैसे वह मन्त्र होता है वैसे बाबा मैं आपकी हूँ, आप



तो मेरे हो, बाबा आप सुखदाता, शान्तिदाता है... परन्तु इससे ताकत नहीं मिलेगी। ऐसे ज्ञानी भक्त नहीं बनना है। पहले मन खाली रखो, कोई भी बात हो उसे बाबा को दिया यानि अपना दिल दे दिया। कोई भी बात का लिंक जुटा हुआ होता है तो ऑटोमेटिकली वो याद आती रहेगी। तो बीच-बीच में 12-13 बारी समय निकाल बाबा का होमवर्क करने के आदती बन जायें।

बाबा को यूज करो, स्वराज्य अधिकारी की प्वाइन्ट स्वरूप को समय पर यूज करो। मुरली में प्वाइन्ट सुनते समय तो बहुत अच्छा लगता है लेकिन प्वाइन्ट बनने में दिक्कत होती है। अष्ट शक्तियों का तो सब वर्णन करते लेकिन समय पर काम में आती हैं? हम मन जीत बने हैं मन पर पूरा अधिकार है तब शक्तियाँ आर्डर मानेंगी। मूल बात है हम स्वराज्य अधिकारी के स्मृति स्वरूप में रहते हैं? बिन्दु लगाते क्वेश्चन मार्क या आश्चर्य की मात्रा तो नहीं लग रही है? तो यह हमारा पुरुषार्थ होना चाहिए। भृकुटी के बीच में आत्मा तख्त पर बैठी है, तख्त पर बैठने वाले का ऑर्डर मानना चाहिए ना। राजा हो और उसका माने कोई भी नहीं तो कौन मानेगा राजा है? तो केवल सुबह शाम नहीं, पर बीच-बीच में और जब बहुत बिजी हो उस समय चेकिंग करते रहो। उस समय हम अपनी कन्ट्रोलिंग पॉवर को देखें। और बातों में अटेन्शन देने के बजाए इसमें समय सफल करें तो बहुत अच्छा है। अगर हम मजबूत हैं तो हमें कोई हिला नहीं सकता है। अचल-अडोल। अभ्यास और चेकिंग, यह दो शब्द जरूर याद रखना। अपने को ऑर्डर पर चलाने की आदत होगी तो ऑटोमेटिकली आदत पड़ेगी। हम अपने को ऑर्डर में नहीं चला सकते हैं तो मेरे साथी कैसे ऑर्डर में चलेंगे? इसलिए हमको यह बहुत अटेन्शन देना पड़ेगा और सिर्फ चेकिंग से काम नहीं चलेगा, चेकिंग के साथ

चेंज भी चाहिए, नहीं तो दिलशिकस्त होंगे।

बहुत बिजी थे, बहुत झगड़े हो गये, बहुत सेवा थी ना, इस तरह से अलबेलापन आ जाने से चेकिंग करना रह जाता है। लेकिन अभी तो झगड़े भी होंगे, सेवा भी होगी, यह होना ही है। अगर मैं सावधान रहूँगी, मन को साफ रखूँगी तो खुश रहेंगे। तो समस्या कभी नहीं कहो, पेपर भले कहो। बाबा से बड़ी बात कोई होती नहीं है। वो सर्वशक्तिवान बाबा हमारे साथ बैठा है, उसके आगे यह क्या है? बड़ी बात भी छोटी हो जाती। तो पेपर हमेशा आगे बढ़ाता, अगर पढ़ाई ठीक पढ़ रहे हैं तो पेपर में पास होंगे और आगे की क्लास में जायेंगे। अनुभव के आधार से बच जायेंगे, यह है अनुभव का क्लास आगे बढ़ना। तो अनुभव सबसे बड़ी अर्थारिटी होता है। आत्मा, परमात्मा और ड्रामा.. इन तीन बातों के अनुभव मूर्त बनो। इन तीनों में से एक भी कम होगी तो गड़बड़ होगी, इन तीन चीजों का पाठ पक्का चाहिए और अनुभव करते जाना चाहिए, इस अर्थारिटी से कभी कोई भी प्रॉब्लम हो, बाबा की मदद से सहज हो सकता है। हमारी एक आशा है कि आप सब यहाँ कन्ट्रोलिंग पॉवर को प्रैक्टिकल में लाकर देखो और बातों में नहीं जाओ और बातें तो यहाँ करनी ही नहीं है। सभी बातों से किनारा करके अभ्यास करो, मैं आत्मा रूप में स्थित हो सकती हूँ? चलते हुए भी मैं आत्मिक रूप में स्थित हूँ? आत्मा करावनहार टांगों को चला रही है। मैं करावनहार आत्मा हूँ, यह कर्मेन्द्रियाँ करने वाली हैं। इसका अनुभव बार-बार करो। एक सेकण्ड चेक चेंज, चेक चेंज, यह प्रैक्टिस करेंगे तो फिर आपका जो चाहते हैं योग लगे, योग माना क्या! बाबा की याद। बाबा की याद से तो ताकत ही मिलती है ना, तो वो प्रैक्टिकल अनुभव होगा। अच्छा।

## दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

**“रिलेशन के साथ-साथ परमात्मा से ठीक कनेक्शन हो तब उसके अन्त को जान सकते हैं”**

(01-09-06)

बाबा ने सिखाया है, मुरली सुनने के बाद मुरली रिवाइज करनी चाहिए। मुरली सुनने के बाद बाबा हमको पैदल लेकर जाता था। अगर कोई सेवा है तो भी कम से कम 10 मिनट शान्त में रह मुरली को रिवाइज करके फिर सेवा में लगे। जिसको रिवाइज करने का रस बैठा है, वो कार्य करते भी मीठे

बाबा के बोल जो सुने हैं, उन्हें अन्दर से भूलते नहीं हैं। याद नहीं करने पड़ते हैं, जिसको और बातें याद करनी पड़ती हैं उन्हें बाबा की याद भूल जाती है। अटपटी बातें, खटपटी बातें, याद रहती हैं। कई हैं जो ऐसी चटपटी बातें करते हैं जो सबको अपनी तरफ खींच लेते हैं। खटपटी बातें जिनका कोई अर्थ

नहीं है, ऐसी बातों में अपना कितना समय गंवाते हैं, यह अपने आप से पूछो। जिसको मीठे बाबा की बातें दिल में अच्छी लगती हैं उनके सामने ये बातें कोई करेगा नहीं, यह अनुभव है। हमेशा आकर्षण और उलझन में रहने वालों के आगे यह बातें आती हैं इसलिए बाबा कहते हैं सम्भालो अपने आपको। रोज़ सुबह अमृतवेले यहाँ आने के पहले बाबा की ऐसी मीठी बातें, नई बातें याद करो। तो अमृतवेले नींद नहीं आयेगी। रमणीक बातें, हर्षितमुख बनाने वाली बातें याद करो।

अभी हम छोटे बच्चे नहीं हैं, छोटे हैं माना अभी बाबा की बातों को धारण करने में छोटे हैं माना बेबी बुद्धि, उन्हें अच्छा लगता है पर कर नहीं पाते हैं। दूसरे हैं बुद्ध, बुद्धि से काम नहीं लेते हैं। बाबा दिव्य बुद्धि दाता है, राइट-रांग, सच झूठ, बाबा सब स्पष्ट सुना देता है।

यह बातें जीवन में सदा हैं तो कोई बात कठिन नहीं है। बात आई बात चली गयी, हम बाबा के पास बैठ गये। बाबा हमारा गाइड है, भले कोई पावन बन रहा है लेकिन उनका कोई गाइड नहीं है, बाबा तो हमारा गाइड है। पहली बात बाबा के बने हैं, अगर भूले करेंगे तो बाबा कहते एडाप्शन रद्द हो जायेगी। भले बाबा ने चुनके कहाँ-कहाँ से लिया है। पर ऐसी बुद्धि बदल जाती है जो बाबा भी दिल से नहीं निकलता। दिल में कुछ और बात है। मुख्य पहली बात है - दिल से बाबा तभी निकलता है, जब कोई भी बात सुनते-देखते न देखो। सी फादर, फॉलो फादर, यह बात मुझे कभी भूली ही नहीं। हर एक अन्दर जाकर देखे कि मैं दिन में कितना बारी बाबा को देखती हूँ। बाबा के सिवाए और किसी को तो नहीं देखती हूँ। फिर बाबा कहते बच्चे, जो कुछ बात हुई, ड्रामा। फिनिश। इसने राँग किया, इसने राइट किया, तुमको यह चिंतन करने के लिए किसने कहा है! बुरा किया या अच्छा किया, तुम्हारा क्या जाता है। इसी चिन्तन में मैं मरूँ तो मेरा क्या हाल होगा! यह ध्यान रखना चाहिए कि खराब चिन्तन में रहने की आदत है तो जब वो मरेगा तो उसके चिंतन में वही आयेगी क्योंकि मरने की तैयारी हम पहले से कर रहे हैं। तो व्यर्थ चिन्तन में जो रहते हैं वो समझ जायें अन्त गति में वही मेरे चिन्तन में आयेगा इसलिए प्रभू चिन्तन में जो मरे वो वैकुण्ठ रस पाये। जिसको वैकुण्ठ याद होगा वही वाया परमधाम, शान्तिधाम, सुखधाम जा सकेंगे। राज्य पद तो पीछे मिलेगा लेकिन अधिकारीपन का नशा अभी से है। अन्दर से निरहंकारी और अधिकारी हैं। जितनी सत्यता है उतनी नम्रता है। परमात्मा बाप ने सत्य नारायण

की कथा सुनाकर मेरे में कूट-कूट कर सत्यता भर दी है। ब्रह्मा सो नारायण कैसा बना! सत्यता की शक्ति को धारण करके। तो ऐसे राज्य में आने के हम भी लायक बन जायें, एक दो जन्म पीछे आयें तो भी मजा नहीं है। 21 जन्मों की राजाई भी उन्हें को मिलेगी जो 84 जन्मों का ख्याल करेंगे। जो 84 जन्मों का ख्याल नहीं करते हैं वो राज्य पद नहीं पाते हैं। 84 वाँ जन्म हमारा अन्तिम जन्म है, बार-बार यह बात याद नहीं रहेगी तो पुराने जन्मों का हिसाब-किताब पकड़ कर बैठ जायेगा, फिर उसी अनुसार चलते रहेंगे। शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा को याद दिलाया बच्चे, यह तुम्हारा 84 वाँ जन्म अन्तिम जन्म है, तो बाबा ने झट स्वीकार कर लिया। कोई-कोई हैं जिनको यह याद रहता है कि हमारा यह अन्तिम जन्म है। मेरा-मेरा छुड़ाने वाला बाबा है। ऐसी बातें स्मृति में न रही, बाकी बातें बुद्धि में रखी, तो बुद्धियोग नहीं लगेगा। याद ऐसी हो जो फरियाद न करना पड़े। याद उसको करें जो मीठा बनाता है। योगी माना न सिर्फ रिलेशन बाबा के साथ है, पर कनेक्शन भी बाबा के साथ है। रिलेशन में तो हमने मम्मा बाबा टीचर सब कह दिया, पर कनेक्शन जैसे है ही नहीं। जिसका उसके साथ कनेक्शन है वह उसके सारे अन्त को जानता है, क्योंकि कनेक्शन गहरा है।

ड्रामा की समझ और कोई संकल्प की उत्पत्ति करने नहीं देती है। बाबा ने कहा है ना, तुम्हारा क्या जाता है। कई आत्माओं को निश्चय नहीं बैठा है कि अभी विनाश आया कि आया। पूछेंगे अभी कितना समय पड़ा है! तो विनाश काले प्रीत बुद्धि हो नहीं सकते। बाबा ने पहले आते ही बताया है विनाशकाल है। विनाश काल को सामने रख हम बच्चों को अपना बनाया, सतयुग की स्थापना शुरू की। बच्चे स्थापना के बगैर विनाश कैसे होगा। होगा जरूर, यह पहले से बता देता हूँ। यह बात जिसकी बुद्धि में ठीक तरह से नहीं बैठी है, वह प्रश्न पूछते रहेंगे कि विनाश कब होगा! लेकिन विनाश हुआ ही पड़ा है। विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ती। तो सदा ही विजय साथ में है। बाबा की इन बातों को जानने, मानने वाला, सी फादर, फॉलो फादर करते, बाप समान बनते और कोई बात मन में नहीं। तो बुद्धि शान्त, श्रेष्ठ हो जाती है। फिर आटोमेटिक बाबा उनसे ऐसे कर्म करायेगा जिससे अनेक आत्माओं का कल्याण हो जाता है। हम न्यारे रहें, साक्षी रहें तो बाबा का प्यार अनेक आत्माओं की सेवा कराता है। फिर बाबा के साथ का अनुभव अनेक आत्माओं को भी अनुभव करायेगा। अच्छा।

## दादी प्रकाशमणि जी की अनमोल शिक्षायें “विकारों पर विजय पाने के लिए गुप्त योगी बनो” (1999)

1) बाबा ने हम बच्चों को ऐसी समझ दी है जो हमें भटकने से छुड़ाती जाती है। मनुष्यों को भक्ति भी बहुत भटकाती है, तो विकार भी भटकाते हैं। विकारों के वशीभूत आत्मा विकारों से छुटकारा पाये - यह बड़ा मुश्किल है। विकारों की कमजोरी परमात्मा बाप का बनने नहीं देती। कमजोरी सत्यानाश कर देती है। विकारों पर विजय पाने के लिए गुप्त योगी बनना पड़े। शो करने वाला नहीं। शो करने वाला कभी भी भागन्ती हो सकता है। ऊपर से कहेंगे बाबा-बाबा लेकिन अन्दर से जो सच्चा प्यार चाहिए, वह नहीं। बाबा के साथ भी बाबा को झूठा प्यार दिखायेंगे। अन्दर होगी ठगी, चोरी.. दूसरे किसी को प्यार करते होंगे जरूर। कोई सम्बन्धियों को प्यार करते होंगे, कोई धन दौलत से करते होंगे.. फिर पार्ट बाबा के साथ ऐसा बजायेंगे, बाबा यह सब तो आपका है। परन्तु एक भी चीज़ को हाथ लगाने नहीं देंगे। अगर तन-मन-धन सब तेरा कहा तो तेरा माना सदा उसकी सेवा में हाजिर। मन तेरा माना कहाँ भी भटक नहीं सकता। एक बाबा दूसरा न कोई। धन तेरा है माना मेरे पास धन नहीं, जो खिलाओ, जहाँ बिठाओ।

2) हम बाबा के बच्चे बेफिकर बादशाह हैं। फकीर नहीं हैं लेकिन मस्त फकीर हैं। जहाँ पांव रखें वहाँ बाबा की सेवा। नहीं तो हमको जरूरत नहीं है धरती पर पांव रखने की। अब हमारी अवस्था ऐसी हो - धरती पर पांव है तो सेवा अर्थ है, नहीं तो ऊपर भी हमारे लिए बहुत सर्विस है। चारों ओर सर्विस है। अगर बाबा सेकण्ड में आ जा सकता है तो हम भी तो बाबा के बच्चे सेकण्ड में आ जा सकते हैं। बाबा पतित तन में आया लेकिन भूमि ऐसी पावन बनाई जहाँ आत्मायें आकर पावन बनें। सेन्टर्स फायर ब्रिगेड हैं, जहां आग लगे बचाने के लिए, दुनिया के हर कोने में फायर ब्रिगेड हैं। लेकिन बचकर कहाँ आयेंगे? बाबा का घर देख लिया है। विनाश के समय

स्थूल में नहीं पहुँचेंगे तो बुद्धि से तो पहुँच ही जायेंगे। इतना हमारा अभ्यास हो, यहाँ आग लग रही है और हम ऊपर चले जाएं। सेकण्ड में अशरीरी बनने की प्रैक्टिस हो, इसकी रिहर्सल करो। हमारे अन्दर बाबा की इतनी याद हो जो कोई भी आत्मा को हमारा यह शरीर दिखाई न पड़े। इसके लिए गुप्त याद। गुप्त बाबा से अपनी लगन लगाते जाना यह है सच्चा पुरुषार्थ।

3) आज इन्टरनेशनल वर्ल्ड पीस डे है। आज के दिन अपनी जो विधि रहती वा शुभ संकल्प रहता कि आज हम सब ब्राह्मणों का वर्ल्ड पीस डे है, यह भी एक बहुत बड़ी अनायास ही ड्रामा अनुसार जो विधि फिक्स हुई है, इसका भी देश-विदेश में अच्छा ही प्रभाव है। यह भी अच्छा साधन है। विदेशों में इस दिन को बहुत महत्व देते हैं। आज के दिन क्लासेज के भी संगठित रूप में प्रोग्राम चलते, सभी का मिलन भी होता। यह समय करीब-करीब सभी को अनुकूल भी होता है। हम सभी का यही शुभ संकल्प है कि हमें विश्व में अपने साइलेन्स के वायब्रेशन चारों तरफ फैलाने है। तो सभी के अन्दर सवरे से यह संकल्प रहता कि आज हम सारे विश्व में शान्ति की किरणें फैलायें।

4) हम जितना संगठित रूप में मिलकर हर एक कार्य करते हैं उतना पावरफुल वायब्रेशन बनता है। तो हम सब एक साथ मिलकर ऐसा कंगन बांधें जो पीस के साथ-साथ लव और युनिटी का भी वायब्रेशन सबको मिले। जितना हम सभी स्वयं को अन्तर्मुखी बनायेंगे, जितना हम एक दो के प्रति शुभ भावना रखेंगे उतना ही हम एक दो के सहयोगी, साथी रहेंगे। कोई भी कार्य व्यवहार में हम सबका साथ है। अब क्यों, क्या के संकल्पों को समाप्त कर स्वयं, स्वयं को अचल बनाओ।